The International Academy of Education (IAE) - शिक्षण की अंतरराष्ट्रिय अकादमी

शिक्षण की अंतरराष्ट्रिय अकादमी (IAE) एक लाभ-निरपेक्ष वैज्ञानिक संस्था है जो शैक्षणिक अनुसंधान के प्रोतसाहन, और उसके प्रसार एवं परिपालन के कार्य करती है । 1986 में स्थापित यह अकादमी अनुसंधान के योगदानों को मज़बूत करने, दुनियाभर में महत्वपूर्ण शैक्षणिक कठिनाइयों को हल करने, तथा नीति निर्धारकों, अनुसंधानकर्ताओं, और व्यवसायियों के बीच बहतर संचार बनाने में जुटी रही है ।

इस अकादमी का मुख्यालय Royal Academy of Science, Literature, and Arts ब्रुसेल्स, बेल्जियम में है और निर्देशांक केन्द्र Curtin University of Technology, पर्थ, ऑस्ट्रेलिया में है ।

IAE का प्रधान लक्ष्य शिक्षण के सभी क्षेत्रों में अध्ययनशील उत्तमता को प्रोत्साहित करना है । इस हेतु, यह अकादमी अंतरराष्ट्रिय स्तर के अनुसंधान-आधारित प्रमाणों का समयसर संश्लेषण करती है । यह अकादमी अनुसंधान और अनुसंधान के प्रामाणिक आधार और नीति में उसके उपयोग की समीक्षा भी देती है ।

अकादमी के Board of Directors के हाल के सदस्य हैं –

Monique Boekaerts, University of Leiden, The Netherlands (President);

Erik De Corte, University of Leuven, Belgium (Past President);

Barry Fraser, Curtin University of Technology, Australia (Executive President);

Herbert Walberg, Stanford University, Palo Alto, United States of America;

Erik Hanushek, Hoover Institute, Stanford University, United States of America;

Maria de Ibarrola, National Polytechnical Institute, Mexico;

Denis Phillips, Stanford University, United States of America

अधिक जानकारी के लिए IAE की वेबसाइट देखें – http://www.iaoed.org

इस शृंखला की पत्रिकाएँ 18 और 19 के संपादक और पहली पत्रिका के लेखक Jere Brophy का 2009 में निधन हो गया ।

Series Preface – शृंखला प्राक्कथन / प्रस्तावना

यह पत्रिका छात्रों को वे भाषाएँ सिखाने के बारे में हैं जो उनकी मातृभाषा या पहली भाषा नहीं है । इस पत्रिका को Educational Practices Series में समावेश के लिए तैयार किया गया है । इसे शिक्षण की अंतरराष्ट्रिय अकादमी (IAE) के द्वारा विकसित किया गया है और इसका वितरण International Bureau of Education और अकादमी के द्वारा किया जाता है । अपने लक्ष्य के एक अंश के मुताबिक, अकादमी अंतरराष्ट्रिय महत्त्व वाले शिक्षण के विषयों के अनुसंधान पर सामायिक संश्लेषण करती है । यह पत्रिका इस शृंखला, जो सीखने को व्यापक रूप से बहतर बनाने की शिक्षण कार्यप्रणालियों के बारे में है, में बीसवी है ।

एलिज़ाबेथ बी. बेर्नहार्ड (Ph.D, University of Minnesota) John Roberts Hale Director of the Language Center and Professor of German Studies at Stanford University, United States of America हैं. प्रोफेसर बेर्नहार्ड पचास से ज्यादा भाषा शिक्षकों का अधिवीक्षण करती हैं, जो कई अंग्रेजी-सजातीय भाषाएँ, जैसे की स्पेनीश, फ्रांसीसी तथा जर्मन, और अंग्रेजी-अजातीय भाषाएँ, जैसे की कोरियन, हिन्दी और स्वहीली सिखाते हैं । उन्होंने दो किताबें भी लिखि हैं—*Reading development in a second language* and *Understanding advanced second-language reading*.

एलिज़ाबेथ बेर्नहार्ड एवा प्रियोनास, सेलीना मकाना, जेनेथ आरदेनियो सेनो, और अनुभा अनुश्री को इस पत्रिका के पहले ड्राफ्ट में उनकी टिप्पणी और सुझावों के लिए धन्यवाद देती हैं । एवा प्रियोनास, ग्रीस की मूल निवासी, स्टेनफर्ड में शिक्षक हैं, Special Languages Program का निर्देशन करती हैं और अंग्रेजी-अजातीय भाषाओं को सिखाने में माहिर हैं । सेलीना मकाना किनिया की रहने वाली हैं, और माध्यमिक स्कूल में अंग्रेजी और साहित्य पढ़ा चुकी हैं । वे किनिया के स्कूलों में शिक्षण तथा शिक्षण-प्रणाली पर गोष्टियाँ भी आयोजित करती हैं । जेनेथ आरदेनियो सेनो फिलीपिंस में पैदा हुई और वहाँ के शिक्षण विभाग, सेबू, फिलीपिंस में नौकरी करती हैं । वे उच्च विद्यालय में पढ़ाती हैं और उनके काम का केन्द्र अंग्रेजी information communication टेक्नोलोजी है । अनुभा अनुश्री भागलपुर, भारत से हैं, और सत्यवती कॉलेज, दिल्ली, भारत में अंग्रेजी साहित्य पढ़ाती हैं ।

शिक्षण की अंतरराष्ट्रिय अकादमी के अधिकारियों को ज्ञात है कि यह पत्रिका ज्यादातर आर्थिक रूप से उन्नत देशों में किए गए अनुसंधान पर आधारित है । फिर भी, पत्रिका भाषा सीखने-सिखाने के ऐसे पहलूओं पर ध्यान देती है जो सर्वव्यापी हैं । जो रीतियाँ यहाँ बताई गई हैं वे सारी दुनिया में ज्यादातर लागू की जा सकती हैं । वाकई, वे आर्थिक रूप से कम विकसित देशों में खास काम आ सकती हैं । लेकिन साथ ही साथ, इन

सिद्धान्तों को स्थानिय अवस्था के मुताबिक आँकना और बदलना चाहिए । किसी भी शिक्षण अवस्था या सांस्कृतिक परिस्थिति में, कार्यप्रणाली के सुझाव और मार्गदर्शन का सचेतन और समझदार उपयोग तथा निरन्तर मुल्यांकन करना जरूरी है ।

HERBERT J. WALBERG,
Editor, IAE Educational Practices Series,
Stanford University, Palo Alto, CA
United States of America
SUSAN J. PAIK
Series Co-Editor
Claremont Graduate University, Claremont, CA
United States of America

Previous titles in the "Educational practices" series:

Table of Contents—विषय सूची

शिक्षण की अंतरराष्ट्रिय अकादमी

शृंखला प्राक्कथन / प्रस्तावना

Introduction – विषय प्रवेश / परिचय

1. नयी भाषा सीखने वालों के अभिलक्षण
2. नयी भाषा सीखना एक प्रक्रिया है
3. दूसरी भाषाएँ सिखाने के पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार करना
4. कक्षा के कार्यों की रूपरेखा और व्यवस्था
5. दूसरी भाषाओं में पढ़ना और शब्दावली सीखना
6. लिखना और विस्तृत संवाद
7. भाषा सिखाने में भूल सुधारना और प्रतिक्रिया देना
8. टेक्नोलोजी और दूसरी भाषाऐं सिखाना
9. मूल्यांकन
10. दूसरी भाषा के शिक्षकों का व्यवसायिक विकास

References

Note: यह प्रकाशन 2010 में International Academy of Education (IAE), Palais des Académies, 1, rue Ducale, 1000 Brussels, Belgium और International Bureau of

Education (IBE), P.O. Box 199, 1211 Geneva 20, Switzerland के द्वारा किया गया है ।

यह पत्रिका मुफ्त में उपलब्ध है और इसकी कॉपी बनाने या अनुवाद करने पर कोइ रोक नहीं है । आपसे अनुरोध है कि IAE और IBE को उस प्रकाशन की कॉपी भेजें जिस में इस पत्रिका का या इसके किसी भाग का इस्तेमाल किया गया हो । यह प्रकाशनइन्टरनेटपर भी उपलब्धहै । " Educational Practices Series" पन्ने पर " Publications" विभाग देखें – http://www.ibe.unesco.org

इस प्रकाशन में हकिकत के चुनाव और प्रस्तुति की जिम्मेदारी लेखकों की है, तथा यह ज़रूरी नहीं है कि UNESCO/IBE इन से सहमत हो । प्रयुक्त उपाधियों और सामग्री की प्रस्तुति UNESCO/IBE के किसी भी देश, इलाके, शहर या जगह की कानूनी स्थिति, या उसके अधिकारियों, या सीमाओं के मूल विचारों या मत से मेल खाए यह जरूरी नहीं है ।

Introduction – विषय प्रवेश / परिचय

आज के आधुनिक युग में दुसरी भाषाओं का

इस्तेमाल करना एक आवश्यक साधन बन गया

है । हालांकि दुनिया को "ग्लोबल विलेज" माना

जाता है, यह उपमा सच्चाई से मेल नहीं खाती क्योंकि किसी भी गाँव की भाषा और संस्कृति समरूप होती है । इस तरह की छवी आधुनिक दुनिया की असरलता, मिलाव और प्राचूर्य को नहीं दर्शा सकती । Mass communication ने लोगों के बीच संपर्क तो बढ़ाया है, लेकिन दूसरों से उनकी भाषा तथा शैली में बात करने की ज़रूरत को कम नहीं किया है ।

नयी भाषाएँ सीखाने की आधुनिक पध्दति इसी अवस्था को दर्शाती है । जहाँ पुराने चलन के तहत शिक्षक भाषा को स्कूल के विषय की तरह पढ़ाते और परीक्षा के माध्यम से उसकी निपुणता को परखते थे, वहीं अब भाषा को सिखाने में उसके संस्कृति चलन और मुल्यों पर विशेष ध्यान दिया जाता है । साथ ही साथ, व्यक्तिगत रुचि और नई भाषा के उपयोग के पीछे के कारणों पर भी खास अमल किया जाता है । पुरानी पध्दति के अनुसार व्याकरण और स्पष्ट लेखन-उच्चारण पर ज़ोर दिया जाता था, लेकिन अब छात्र भाषा के साथ क्या (और कैसे) कार्य कर सकते हैं यह ज्यादा महत्वपूर्ण है । क्या वे नयी

भाषा में सभ्य तरीके से सवाल पूछ सकते हैं ? क्या वे इस भाषा में बोले गए अकल्पित टुकड़े को सुनकर उचित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ? क्या वे इस भाषा में लिखे लेख को पढ़कर उस में बसे संस्कृति अर्थ को समझ सकते हैं ? क्या वे इस भाषा के माध्यम से नयी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ? इन्हीं सवालों पर हर शिक्षक को गौर करना चाहिए ताकि उनके छात्र अलग भाषाएँ बोलने वोलों के साथ बात-चीत कर विश्व स्तर पर अपना योगदान कर सकें ।

शिक्षा को सुधारने के लिए और उसकी प्रभावशीलता तथा उपयोगिता को बनाए रखने के हेतु हम अनुसंधान-आधारित ज्ञान पर भी निर्भर हैं । इस क्षेत्र में किया गया अनुसंधान भाषा सीखने की प्रक्रिया पर रोशनी डालता है और यह दिखाता है कि भाषा सीखना एक ढ़ाँचे के ऊपर दूसरे ढ़ाँचे को बिठाने जैसा नहीं है बल्कि छात्र गलतियाँ करते-करते ही व्याकरण के सही प्रकारों को जान पाते हैं । गलतियाँ खुद भाषा सीखने का हिस्सा मानी जाने लगी हैं, न की भूल जिन्हें सुधारा जाए । अनुसंधान शिक्षकों को अपनी कक्षा को आयोजित करने के नये तरीके भी बताता है । ऐसी कक्षाएँ, जहाँ शिक्षक सारा समय बोले और छात्र केवल सुने, अब सफल नहीं मानी जातीं । दुसरे तरीके, जैसे छात्रों को दलों में बाटना, उन्हें भाषा-संबंधित कार्य एक साथ हल करने देना, और जानकारी तथा मदद के

लिए एक-दूसरे पर निर्भर बनाना, अब ज्यादा असरदार माने जाते हैं । साक्षरता पर किए गए अनुसंधान के द्वारा शिक्षक छात्रों को नये तरीकों से ऐसे औज़ार दे सकते हैं जिससे छात्र मूल जरूरतों से बढ़कर भाषा को समझने और उसमें अभ्यास करने की क्षमता बना सकें । दूसरी भाषाएँ लिखना-पढ़ना सीखने वालों पर किया गया अनुसंधान नई भाषा पढ़ने-लिखने में मातृ भाषा साक्षरता के योगदान पर ध्यान केन्द्रित करता है । भाषा को समझने में शब्दावली के महत्तव पर भी अध्ययन किया गया है ।

आधुनिक जीवन और पढ़ने-लिखने पर टेक्नोलोजी के प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता । हालांकि आज भी किताबें, पेन-पेन्सिल और कागज़ सीखने-सिखाने के प्रधान साधन हैं, डिजिचल टेक्नोलोजी, अगर उपल्बध हो, शिक्षकों को ऐसी सामग्री दे सकती है जो पहले असंभब थे । टेक्नोलोजी के द्वारा शिक्षक असिमित ओडियो-विडियो सामग्री का लाभ उठा सकते हैं और अपने छात्रों को भाषा में विभिन्न वक्ताओं को देखने-सुनने का अनुभब करा सकते हैं ।

एक आखरी और जरूरी बात, टेक्नोलोजी शिक्षक के व्यवसायिक जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा है । यह आम बात है कि ज्यादातर शिक्षक वो भाषाएँ सिखाते हैं जो उनकी

अपनी नहीं, ब्लकि खुद सीखी हुई हैं, और टेक्नोलोजी ऐसे शिक्षकों को इस भाषा और उससे जुड़ी संस्कृति से संपर्क बनाये रखने में बहुत मदद करती है ।

1. नयी भाषा सीखने वालों के अभिलक्षण

शिक्षकों को भाषा के किसी काल्पनिक ख्याल पर नहीं बल्कि अपने छात्रों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए ।

किसी भी तरह की शिक्षा का सीधा संबन्ध सीखने वालों से होना चाहिए—उनके पास कितनी सहायक जानकारी है, किसी विषय को सीखने के पीछे क्या प्रेरणा, रुचि और उत्सुकता है, और सीखने के बाद वे उस शिक्षा के साथ क्या हासिल करना चाहते हैं । जैसे कि विषय प्रवेश में बताया गया है, भाषा सीखने को किसी स्कूल के विषय की तरह नहीं देखना चाहिए जहाँ केवल परीक्षा पास करने के लिए छात्र विषय को पढ़ते हैं । पहले के ज़माने में, जब दूसरी संस्कृतियों और दूसरे प्रदेशों के लोगों से बहुत कम सम्पर्क था, भाषा सीखने को स्कूल का विषय माना जाना शायद ठीक था । लेकिन आजकल, नई भाषा जानना किसी भी पढ़े-लिखे व्यक्ति को प्राप्त औज़ारों में से एक जरूरी औज़ार है । आधुनिक युग के छात्र और शिक्षक इस बात को बखूबी समझते हैं । किसी नई भाषा का अच्छी तरह इस्तेमाल कर पाने से ही लोग अपने ज्ञान और कुशलता को दुनिया में फैला

सकते हैं । इस धारणा का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि सीखने वालों से एक नई संस्कृतिक पहचान धारण करने की अपेक्षा नहीं की जाती ; वे तो बस पहले से सीखे ज्ञान और कुशलता को नए ज्ञान और कुशलता से बढ़ा रहे हैं ।

एक प्रचलित मिथ्या यह है कि छोटी उम्र के लोग बड़ी उम्र के लोगों से ज्यादा जल्दी भाषाएँ सीख सकते हैं । यह सच है कि छोटी उम्र के छात्र ज्यादा शुध्द उच्चारण प्राप्त करते हैं । मगर सभी सीखने वालें ज्यादातर भाषा संबंधी कार्यो में सफल होने की क्षमता रखते हैं । इन दो श्रेणियों में एक बड़ा अंतर सीखने वालों के चिन्ता-स्तर का है । छोटी उम्र के छात्र रिस्क लेते हैं और वे कितनी गलतियाँ कर रहे हैं उस बारे में कम सोचते हैं । बड़ी उम्र के छात्रों को प्रयोग करने में और खुलकर भाषा का उपयोग करने में थोड़ा ज्यादा वक्त लगता है । छोटे दलों में बटकर काम करना ऐसे छात्रों के लिए बहतर है क्योंकि तब वे नई चीज़ों का प्रयोग आसानी से करते हैं, और कम लोगों के सामने गलतियाँ करने के बाद बड़े दलों में ज्यादा आराम से भाग ले सकते हैं । ये छात्र शायद पहले भाषा संबंधी कार्य को लिखना और फिर उसे लोगों के सामने प्रस्तुत करना पसंद करते हैं ।

आम तौर पर सीखने वाले नयी चीज़े सीखने के लिए अपने पहले ही से बटोरे ज्ञान पर आधारित रहते हैं । बड़ी उम्र के छात्रों के संबंध में यह खास लागू होता है । दस वर्ष और ऊपर के छात्र नयी भाषा सीखते समय अपने सबसे ताकतवर ज्ञान-साधन—अपनी मातृ भाषा—पर निर्भर होते हैं । इस सहज प्रवृति के कई नुकसान हैं, जैसे कि सीखने वाले जाने-पहचाने व्याकरण और उच्चारण को नयी भाषा पर थोपने लगते हैं । वे ऐसे नये आकारों को कभी-कभी नकार देते हैं जो पहले से सीखे आकारों से मेल नहीं खाते । इन सब के बावजूद इस सहज प्रवृति के कई फ़ायदे भी हैं । जिस चीज़ का पहले से कुछ अनुभब हो उसे सीखना ज्यादा आसान होता है । सीखने वालों को सीखी हुई भाषाओं और नयी भाषा की तुलना करने का हमेंशा बढ़ावा देना चाहिए और इन तुलनाओं की क्लास में लगातार चर्चा होनी चाहिए । छात्र नयी भाषा से संबंधित संस्कृतिक मूल्यों को भी अपने संस्कृतिक मूल्यों और विचारों के आधार पर ही समझ सकते हैं । हालांकि ज़्यादा से ज़्यादा शिक्षण नयी भाषा में होना चाहिए, शिक्षक छात्रों को अपनी मातृ भाषा में नयी भाषा से संबंधित संस्कृतिक मूल्यों को समझाने का प्रोतसाहन दे सकते हैं । रूढ़ीवाद और विष्टोक्ति प्रयोग से बचते हुए किसी दूसरी भाषा से संबंधित संस्कृति की व्याख्या करना भाषा के सीखने-सिखाने का अत्यंत जरूरी हिस्सा है ।

आगे पढ़ने के सुझाव – Dörnyei, 2005; Horwitz, 2001.

2. नयी भाषा सीखना एक प्रक्रिया है ।

नई भाषा सीखने में वक्त लगता है । नियम, आकार और शब्दार्थ का धीरे धारे विकस होता है । उन्हें एक ही बार में, एक सन्दर्भ में नहीं सीखा जा सकता ।

पिछले कुछ सालों में भाषा सिखाने के अनुसंधान में तीव्र वृद्धि हुई है । नई भाषा सिखने का एक अहम हिस्सा यह है कि, मातृ भाषा की ही तरह, नई भाषा सिखने की प्रक्रिया भी विकासात्मक होती है । इसका मतलब है कि छात्र एक के बाद एक व्याकरण के ढ़ाँचे और शब्द सीखकर भाषा में निपुणता नहीं हासिल करते । भाषा के प्रकार होते होते ही इस्तेमाल में आते हैं । कभी-कभी सीखने वाले किसी प्रकार को सीखकर उसे भूल जाते हैं । कई हफ्तों या महीनों बाद वे उसे सुधार पाते हैं । शिक्षक जब इस प्रक्रिया को समझ लेते हैं, तब वे छात्रों की गलतियों को लेकर ज्यादा प्रतिक्रिया नहीं करते हैं । शिक्षकों का छात्रों की इस सीखने की आन्तरिक प्रकिया को समझना बहुत आवश्यक है ।

सभी शिक्षक जानते हैं कि यह जरूरी नहीं है कि किसी समय पर जो सिखाया जाए वह उसी समय सीखा भी जाए । छात्र भाषा के तथ्य को समझ लेते हैं लेकिन कई बार दर्षाने पर ही ये प्रकार एक भाषा-संबंधी व्यवस्था में ठीक तरह से जुड़ पाते हैं । उदाहरण के तौर पर, छात्र बहुत जल्दी समझ लेते हैं कि कई भाषाओं में नियमित (regular) और अनियमित (irregular) क्रियाएँ होती हैं या संज्ञा को एकवचन और बहुवचन बनाने के क्या नियम हैं । शिक्षक ज्यादातर पहले नियमित (regular) क्रिया, फिर अनियमित (irregular) क्रिया और उसके बाद भूतकाल के प्रकार सिखाते हैं । हम कायदों को oversimplify कर देते हैं (जैसे कि अंग्रज़ी में भूतकाल के लिए क्रिया में -ed जोड़ना, या फिर संज्ञा को बहुवचन बनाने के लिए उसमें -s जोड़ना) और ऐसी ही चीज़ें सभी

छात्र किसी भी भाषा को सीखते समय करते हैं

। इसलिए हम कई बार " goed", "wented," या " peoples" (उदा. "I saw the peoples") जैसे उच्चारण सुनते हैं और शिक्षक घबराकर यह सोचते हैं कि छात्रों ने कायदों के अपवाद को बिलकुल नहीं समझा है। असल में, छात्र सक्रिय रूप से भाषा सीख रहें हैं और उन्हीं कायदों को लागू कर रहे हैं जो हमने उन्हें सिखाए हैं । इसका यह मतलब नहीं है कि छात्रों की गलतियों को कभी भी सुधारा नहीं जाना चाहिए । बल्कि गलतियों को सुधारना

सही है, बस यह याद रखना जरूरी है कि भूल करना विकास का ही लक्षण है । इससे शिक्षकों को बोध होगा की आगे क्या करना चाहिए ।

भाषा सीखने में विकास होने के लिए सीखने वालों को एक-दूसरे से (नई भाषा में) बात-चीत करने के लगातार मौके देना जरूरी है । छात्रों को भाषा के नए प्रकार सिखाने का सबसे प्रभाविक तरीका उन्हें आपस में बात कर नए प्रकारों का इस्तेमाल करने देना है । ज़ाहिर है कि गलतियाँ होंगी, लेकिन छात्रों का भाषा के किसी प्रकार का इस्तेमाल करते समय उस प्रकार पर ध्यान केन्द्रित होना ही कुशलता का रास्ता है । सभी तरह की क्रियाएँ भाषा सीखने में सहायता करती हैं । सुनने तथा पढ़ने से छात्रों को नई भाषा के प्रकारों को संदर्भ में देखने और सुनने का मौका मिलता है । छात्रों को यह समझना जरूरी है कि भाषा के जो प्रकार वे सीख रहे हैं, उन प्रकारों में संदेश बसे हुए हैं । केवल पढ़ने और सुनने से ही छात्र समझ पाएँगें कैसे और क्यों भूतकाल एक या दूसरे तरीके से वर्णित किया जाता है या क्यों किसी स्थान पर किसी शब्द का उपयोग ज्यादा ठीक होगा । लिखने का अभ्यास भी महत्वपूर्ण है । लेखन छात्र को जो सीखा है उसे ठोस बनाने का और अपने खुद के संदेश प्रस्तुत करने का अवसर देता है । लिखने वाले जल्द ही सीख लेते हैं कि अगर पढ़ने वाले के लिए संदेश स्पष्ट नहीं है तो उसे दोबारा सुधारकर

लिखना आवश्यक है । भाषा के प्रकारों का अभ्यास करने के लिए लेखन से बहतर कोई तरीका नहीं है ।

नई भाषा सीखने वालों की मदद करने की एक और पध्दति है पिछले कार्यों और लेखों को दोहराना । पहले पढ़े गए लेखों को फिर से पढ़ाते समय लेख को समझने के नये स्तरों पर ध्यान देना चाहिए । जब छात्र ऐसे लेखों पर काम करते हैं जिन से उनकी पहले से जान-पहचान हो, तब वे भाषा के पेचीदे मसलों पर और जटिलता से काम कर सकते हैं । छात्र ऐसे लेखों को किसी और की आवाज़ में दोबारा लिख सकते हैं या ऐसे शब्दों का इस्तेमाल कर सकते हैं जो उन्होंने शब्दकोश में पढ़े हैं । सीखने वालों की प्रगती के लिए उन्हें ऐसे अवसर देना जरूरी है ।

आगे पढ़ने के सुझाव – Lightbrown & Spada, 2007; Collier, 1987.

3. दूसरी भाषाएँ सिखाने के पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार करना

भाषा के पाठ्यक्रम की रूपरेखा सीखने वालों की रुचि पर आधारित होनी चाहिए और उस में सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने का समावेश होना चाहिए ।

हमें पता है कि भाषा सीखने की प्रक्रिया ऐसी नहीं है जिस में एक के बाद एक व्याकरण के प्रकार और शब्दों को सीख उन्हें जोड़कर एक संपूर्ण ढाँचा तैयार किया जाता है । भाषा सीखने की प्रक्रिया विकासात्मक होती है । सीखने वालों को एक लंबी अवधी के लिए सभी तरह के शब्द, व्याकरण के आकार, और ढाँचों को सीखने का अवसर देना ज़रूरी है । पाठ बनाने के दो बहुत ही प्रभावशाली तरीके हैं । एक है प्रसंग तथा विषय आधारित (theme and topic based) और दूसरा तत्व आधारित (content based)। ये दोनो रूपरखाओं के द्वारा छात्रों को भाषा के वास्तविक उपयोग से परिचय कराया जा सकता है । ये रूपरखाएँ छात्रों की रुचि और ज्ञान पर आधारित होती हैं और इन्हें आगे बढ़ाया भी जा सकता है । इस तरह की पाठ्यक्रम रूपरखा सीखने वालों को कुछ आसान भी लगती है क्योंकि वे अपने पहले से सीखे हुए ज्ञान पर आधारित रहकर और कठिन रचनाओं का गठन कर सकते हैं ।

भाषा के विविध प्रकारों और शब्दों का इस्तेमाल करने के लिए मौसम जैसे प्रसंग आसन और बहुत लाभदायक होते हैं । मौसम के साथ अलग-अलग तरह की क्रियाएँ इस्तेमाल की जा सकती हैं, जैसे कि आज मौसम कैसा है, कल मौसम कैसा हो सकता है, कल मौसम बहुत खराब था, बताओ तुम घर कैसे गए, वगैराह । यह प्रसंग आगे बढ़ाते हुए,

अख़बार में पढ़कर या इन्टरनेट पर खोज कर दुनिया भर के मौसम के बारे में पता लगाया जा सकता है । उसके बाद छात्र अपने मित्र को पत्र लिखकर मौसम का हाल बता सकते हैं और मित्र के सबसे पसंदीदा मौसम के बारे में पूछ सकते हैं । एक और क्रार्य यह भी हो सकती है कि छात्रों को दलों में बाँटकर उन्हें एक दुनिया में कहीं भी एक यात्रा की योजना बनाने का काम दिया जाए और साथ ही साथ उन्हें यह तय करना पड़े कि किस तरह के कपड़े साथ ले जाना जरूरी होगा । जैसा इस उदाहरण में हमने देखा, प्रसंग-विषय आधारित पध्दतियाँ छात्रों से व्याकरण के विविध प्रकारों का समावेश करने की माँग करती हैं और इस समावेश का सुनने, बोलने, लिखने और पढ़ने में इस्तेलाल किया जा सकता है । यह जरूरी है कि ऐसे प्रसंग का उपयोग किया जाए जो छात्रों को जाना-पहचाना हो ।

तत्व आधारित (content based) पाठ्यक्रम की रूपरेखा कुछ अलग होती है । तत्व आधारित पाठ्यक्रम में नई जानकारी प्राप्त करने पर ज़ोर दिया जाता है । असल में, एक तरह से इस पध्दति के तहत जानकारी हासिल करना भाषा सीखने से ज्यादा महत्वपूर्ण होता है । तत्व आधारित पाठ्यक्रम को छात्रों को स्कूल में सिखाए जा रहे अन्य विषयों से ही उत्पन्न करना चाहिए । इस तरह के पाठ्यक्रम के लिए शिक्षक का विषय में

जानकार होना जरूरी है । इसके अतिरिक्त, शिक्षक का भाषा में बहुत निपुण होना भी जरूरी है क्योंकि इस तरह के पाठ्यक्रम में व्याकरण और शब्दावली दोनों छात्रों के लिए नए और जटिल हो सकते हैं ।

सामाजिक अनुसंधान हमें भाषा सिखाने के पाठ्यक्रम बनाने के लिए बहतरीन जानकारी देता है । दुनिया भर में ज्यादातर प्रारंभिक और मध्य स्तर स्कूलों के पाठ्यक्रम चाहते हैं कि छात्र दूसरे देशों की संस्कृतियों, भूगोल, और प्राकृतिक संसाधनों के बारे में जानें । छात्र शुरूआत में अपने देश का नक्षा बना सकते हैं जिसमें वे पहाड़, नदी, और समुद्र जैसे भौगोलिक चिह्नों के नाम उस भाषा में लिखें जो वे सीख रहे हैं । इसके बाद शिक्षक उस देश या प्रान्त के नक्षे से उनका परिचय करवा सकते हैं जहाँ वह (दूसरी) भाषा बोली जाती है । छात्र इस नए नक्षे पर भौगोलिक चिह्नों के नाम लिखकर दोनों जगहों की तुलना कर सकते हैं (जैसे कि नदियाँ कितनी लंबी हैं या पहाड़ कितने ऊँचे हैं) । फिर वे पुस्तकालय में उस देश या प्रान्त की प्राकृति के बारे में शोध कर सकते हैं । जानवरों के नाम और वे जानवर कहाँ रहते हैं यह भी जाना जा सकता है ।

इन दोनों आधुनिक पध्दतियों से यह जरूरी हो जाता है कि कक्षा में पढ़ना, लिखना, बोलना और सुनना हमेंशा जारी रहे । छात्रों से ऐसे विषय पर नहीं बुलवाना चाहिए जिस

पर उन्हें लिखवाया न गया हो, और उन्हें उस चीज़ के बारे में लिखने को नहीं कहा जाना चाहिए जिसके बारे में उन्होंने पढ़ा न हो, इत्यादि ।

आगे पढ़ने के सुझाव – Shrum & Glisan, 2005; Fortune & Tedick, 2008; Snow, 1998.

4. कक्षा के कार्यों की रूपरेखा और व्यवस्था

छात्रों को वास्तविक प्रसंगों पर आधारित कार्य देने से ही भाषा की शिक्षा प्रभावशाली होती है ।

प्रसंग, विषय और तत्व आधारित पाठ्यक्रम में आम तौर पर ऐसे कार्य बनाए जा सकते हैं जो छात्र इकट्ठे एक दल में सुलझाएँ ।

अनुसंधान हमें बताता है कि जानकारी अंतराल (information gap) वाले कार्य कक्षा में बहुत प्रभावशाली होते हैं । जानकारी अंतराल (information gap) का मतलब है कि दल के हर छात्र के पास कुछ ऐसी जानकारी है जो दूसरों के पास नहीं है । छात्रों को कार्य खत्म

करने के लिए एक-दूसरे से पूछकर पूरी जानकारी हासिल करनी पड़ेगी । इस तरह के जानकारी अंतराल कार्यों पर किए गए अनुसंधान से हमें यह भी पता चला है कि छात्र एक-दूसरे से भी सीखते हैं और ऐसे मौके उनके भाषा प्रवाह और शुद्धता को बहतर बनाते हैं । शिक्षकों को अक्सर यह डर रहता है कि छात्र एक-दूसरे से गलत भाषा सुनेंगे और खुद गलतियों की नकल करना शुरु कर देंगे । इस विषय पर किए अनुसंधान के मुताबिक छात्र दूसरे छात्रों से सुनी गलतियों की नकल नहीं करते क्योंकि जब दल में कार्य पूरा करना होता है, तब छात्रों का सारा ध्यान अर्थ पर केन्द्रित होता है । उनका मक्सद एक-दूसरे को जितना हो सके उतने अच्छे से अपनी बात समझाना है और इसके लिए वे सीखी हुई भाषा का पूरा उपयोग करते हैं । शिक्षक और छात्र के बीच के सम्पर्क से अधिक फायदेमंद होती है छात्रों के बीच बात-चीत क्योंकि इस में भाषा का ज्यादा उपयोग होता है ।

अंततः, अनुसंधान यह संकेत करता है कि छात्रों को अलग-अलग तरह के दलों में बाँटा जाना चाहिए । अगर एक बार उन्हें ऐसे दल में डाला है जहाँ सभी की भाषा में निपुणता समान है तो अगली बार उन्हें ऐसे दल में डालना चाहिए जहाँ कुछ छात्र दूसरों से अधिक भाषा का उपयोग कर सकते हैं । जब एक ही दल में अलग-अलग निपुणता के स्तर

होंगे, ज्यादा सक्षम छात्र भाषा के बहतर प्रयोग से अपनी बात को कहकर कम सक्षम छात्रों की मदद करेंगे । कम सक्षम छात्र उँचे स्तर की भाषा सुनने का फ़ायदा उठा पायेंगे ।

जानकारी अंतराल (information gap) वाले कार्य को बनाना काफ़ी आसान है । एक आम कार्य में छात्रों को दो दलों में बाँटा जा सकता है । उदाहरण के तौर पर, एक छात्र के पास एक घर के नक्षे के साथ फर्नीचर कहाँ रखा जाएगा उसकी भी जानकारी है । दूसरे छात्र के पास केवल खाली घर का नक्षा है । यह दूसरा छात्र सवाल पूछकर पता लगाएगा कि कुरसियाँ, किताबों के खंड और मेज़े घर के कमरों में कहाँ रखी जाएँगी । जिस छात्र के पास पूरी जानकारी है वह दूसरे छात्र को यह भी बता सकता है कि क्या चीज़ ठीक-ठीक कहाँ रखी जानी चाहिए । इस तरह बात-चीत चलती रहनी चाहिए जब तक कि खाली नक्षा भरे हुए नक्षे जैसा लगने लगे । ज़ाहिर है कि छात्र पूरी तरह अपनी बात नहीं समझा पाएँगे, और कुछ फर्नीचर गलत जगहों पर रख दिया जाएगा । ऐसा होने पर वे अलग-अलग तरीकों से बातचीत कर अपनी बात समझाने का प्रयत्न करेंगे ।

ऐसे ही और जानकारी अंतराल वाले कार्य मौसम पर भी बनाए जा सकते हैं जिसका उदाहरण भाग 3 में दिया गया है। ऐसा किया जा सकता है कि हर छात्र को दुनिया की

किसी जगह का अधिकतम तापमान दिया जाए, और दल साथ मिलकर यह तय करे कि क्या समान तापमान वाले शहर एक ही भौगोलिक क्षेत्र में स्थित हैं या नहीं । यहाँ एक और खास मुद्दा इस बात पर विचार करना है कि क्या शहरों का भौगोलिक स्थानिकीकरण उनके तापमान पर आधारित हो सकता है या नहीं । इस बात का प्रमाण ढूँढने के लिए स्कूल के पुस्तकालय में छात्र इन शहरों के बारे में पढ़कर और जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ।

इस प्रकार की कार्य-आधारित शिक्षा के आखिरी भाग में जरूरी है कि छात्र अपनी शोध के परिणाम दूसरे छात्रों के साथ बाँटें । उन्हें यह व्यक्त करना आना चाहिए कि उन्होंने क्या किया या वे अपने परिणाम तक कैसे पहुँचे । इसके साथ कार्य पूरा होता है और कक्षा नये कार्य के लिए तैयार है । अगला कदम यह हो सकता है कि छात्र अपने सहपाठियों के लिए खुद कार्य तैयार करें । इससे भी ध्यान संदेश और अर्थ पर होगा, न कि व्याकरण के छिट-पुट प्रकारों और शब्दों पर ।

आगे पढ़ने के सुझाव – Ellis, 2001; Norris & Ortega, 2000.

5. दूसरी भाषाओं में पढ़ना और शब्दावली सीखना

भाषा की सभी कुशलताओं में सबसे टिकाऊ है पढ़ना

भाषा में पढ़ पाना ही निर्धारित करता है कि कोइ किस हद तक, अगर चाहे तो, वैश्विक मंच पर अपना लाभदायक योगदान दे सकता है । लिखित पाठ जानकारी प्राप्त करने के मूल्यवान साधन हैं । इसमें कोई विवाद नहीं है कि दूसरी भाषा सीखने वालों को अपने मनपसंद विषयों के बारे में और जानने की जरूरत होती है । उन्हें यह समझना बहुत आवश्यक है कि वे किस तरह अपनी पूर्व शिक्षा के माध्यम से नये पाठों को समझें और अपनी शब्दावली बढ़ाएँ । साथ ही साथ यह भी जरूरी है कि वे क्या पढ़ना लाभदायक होगा इसका सही और समझदार चयन करें ।

सभी छात्रों के लिए पढ़ना एक चुनौती है । अनुसंधान हमें बताता है कि मातृभाषा से परे दूसरी भाषाओं में पढ़ने के तीन अंग या भाग हैं । पहला अंग है भाषा की असली जानकारी, मतलब व्याकरण का, और सबसे ज्यादा जरूरी, शब्दावली का ज्ञान । विस्तृत शब्दावली लिखित पाठ को समझने के लिए अनिवार्य है । पढ़ने के लिए पाठ के लगभग सारे शब्दों को पहचानना और समझना जरूरी है ।

किसी नई भाषा में पढ़ पाने का दूसरा अंग है सीखने वाले की पहली साहित्यिक भाषा जिसके द्वारा छात्र यह जान पाता है कि भाषाएँ कैसे काम करती हैं और लिखित भाषा से क्या आशा की जा सकती है । पहली या मातृभाषा का साहित्यिक ज्ञान पढ़ने वाले को संकेत करता है कि अनुच्छेद में एक सामंजस्यपूर्ण संदेश बसा होता है, और दृश्य कारक जैसे मुद्रा का माप, लिखावट का तरीका, कितनी तस्वीरें हैं आदि सब लिखित पाठ के संदेश का आधार हैं ।

नई भाषाओं में पढ़ने का तीसरा मुख्य अंग है दुनिया की जानकारी और व्यक्ति की विशेष रुचि तथा प्रतिबध्दता का स्तर । वास्तव में, अगर छात्र की रुचि का स्तर ऊँचा है और विषय का खूब ज्ञान है तो नई भाषा की कम जानकारी पढ़ने में बाधा नहीं डाल पाती ।

शिक्षकों को चाहिए कि प्रशिक्षण का अच्छा खासा समय छात्रों को शब्द सिखाने में बिताया जाए । शब्द सिखाना तभी प्रभाविक होता है जब अलग अलग शब्दों का बार-बार अभ्यास कराया जाए और इन शब्दों का विभिन्न संदर्भों में इस्तेमाल किया जाए । इस संबंध में यह आसानी से देखा जा सकता है कि हर प्रकार के कार्य में पढ़ने का समावेश होना कितना जरूरी है । एक दूसरे से बातचीत करने से और लिखित पाठों के द्वारा

अपनी समझ को पक्का करने से छात्र शब्दों को संसाधित कर उन्हें सक्रिय शब्दावली में शामिल कर सकते हैं ।

जैसा कि ऊपर बताया गया है, अनुसंधान के मुताबिक पढ़ना एक व्यतिगत गतिविधि भी है । छात्रों को अपने निजी शब्दकोश बनाने की बढ़ावा देना चाहिए, जहाँ वे अपने खास शब्द लिख सकें । उदाहरण के लिए, किसी छात्र को जानवरों के नामों में ज्यादा रुचि है, तो किसी और को गाड़ियों में । छात्रों को स्वतंत्रता से अपनी रुचि के क्षेत्र में पढ़ने का बढ़ावा देना चाहिए और ऐसे शब्दों का ज्ञान प्राप्त करने के मौका प्रदान करना चाहिए जिससे कि उनकी पढ़ने की क्षमता और बढ़े । इस प्रकार की स्वतंत्र पढ़ई से उनकी वाक्यपटुता भी बहतर होगी । किसी विषय में खास रुचि और व्यतिगत शब्द ज्ञान होने के कारण वे स्वयं ही लेखों की मात्रा बढ़ाते जाएँगें और ज्यादा पढ़ेंगें ।

शिक्षकों को भी समझना चाहिए कि भविष्य में भाषा को बहतर बनाने के लिए पढ़ना एक ताकतवर साधन है । पढ़ते समय सीखने वाले व्याकरण के प्रकारों का संदर्भ में विश्लेशण करते हैं, इसलिए नहीं कि उन्हें वे प्रकार बहतर समझ में आएँ, बल्कि इसलिए कि उन्हें लेख का संदेश बहतर समझ में आएँ । उदाहरण के तौर पर, छात्र मूल रूप से यह न समझते हों कि विभिन्न कालों में किस तरह अलग अलग अर्थ होते हैं जब तक कि वे

एक ऐसी कहानी न पढ़े जिसमें तरह तरह की घटनाएँ किस तरह और कब हुई इसको व्यक्त करने के लिए विभिन्न कालों का उपयोग किया गया हो ।

वास्तविक लेख संस्कृतिक अव्यय के लिए एक बहतरीन स्त्रोत हैं । ऐसे विषयों के बारे में पढ़ना जिन्हें देशी वक्ता भी पढ़ रहे हैं—फिर वह किसी जाने-माने खिलाड़ी के बारे में हो, विनाशकारी मौसम, भुवैज्ञानिक तबाही हो, या पड़ोसी देश पर टिप्पणी हो—सीखने वालों को अहसास दिलाते हैं कि उस भाषा के सामाजिक संदर्भ में क्या महत्वपूर्ण है । शिक्षकों को छात्रों की सामाज-संस्कृति और जिस भाषा को सीख रहे हैं उससे जुड़ी सामाज-संस्कृति में समानता और अंतर को समझने के लिए विविध प्रकार के लेख पढ़कर उनके बारे में बोलने का मौका देना चाहिए ।

आगे पढ़ने के सुझाव – Bernhardt, 2010; Hedgcock & Ferris, 2009; Nation 2004.

6. लिखना और विस्तृत संवाद

लेखन से छात्र भाषा को एक सुसंगत संपूर्णता में ढाल सकते हैं जो उनके विचार और दृष्टिकोण को दर्शाती है ।

पढ़ने जैसे, लिखना भी भाषा की शिक्षा को आगे बढ़ावा देना का एक प्रतिभावान साधन है । लेखन के कार्यों में छात्रों को भाषा को एक लंबे विस्तार में पेश करने का मौका दिया जाता है जिस में बोलते समय होती रुकावटों और विघ्नों के लिए कोई स्थान नहीं है । अनुसंधान के मुताबिक सफल लेखक भाषा के उत्तम शब्दों और वचनों का चयन कर लेखन के समय का सदउपयोग कर अपने लेखन को और भी कृत्रिम बनाते हैं । सफल लेखक दो चीज़ो पर खास ध्यान देते हैं—अपने श्रोतागण पर, और लेख के संदेश पर । वे बहुत समय अपने लेखन की व्यवस्था और उसकी अनुकुलता और परिशुद्धि में बिताते हैं । दूसरी ओर, असफल लेखक लिखने को सिर्फ एक व्याकरण का अभ्यास मानते हैं । वे कोरी प्रक्रिया पर ध्यान केन्द्रित करते हैं और श्रोतागण तथा लेख के संदेश को अनसुना कर देते हैं । सफल और असफल लेखकों में इस प्रकार का साफ अंतर शिक्षकों को ऐसी खिड़कियाँ प्रदान है जिनके द्वारा वे देख पाते हैं कि अलग अलग छात्र भाषा के शब्द और प्रकारों को किस तरह समझत रहे हैं ।

लेखन के कार्यों को दलों में किया जा सकता है । शिक्षकों को छात्रों को दलों में अपने लेखन की योजना बनाने के लिए बाँटना चाहिए । छात्रों को अपने दल में विक्षिसि (brainstorm) करने को कहा जा सकता है ताकि वे जरूरी शब्दों का चयन कर सकें या

विषय के बारे में कैसे लिखना है इस पर विचार कर सकें । खुद का वर्णन करना एक सामान्य लेखन कार्य है । छात्रों को व्यक्ति के वर्णन से संबंधित शब्दों की सूची बनाने को कहा जाना चाहिए, जैसे कि रूप-रंग (बालों और आँखों के रंग) स्वभाव (अच्छा, सहायक, गुणवान) और शौक (जानवर, समुद्र, यात्रा करना) । पढ़ने का यहाँ बहुत महत्व है, जैसे कि छात्रों के पास शब्दकोश होने चाहिए जिनकी सहायता से वे अपनी शब्दों की सूची तैयार कर सकें । छात्रों को समय भी देना जरूरी है जब वे तैय कर सकें कि खुद के वर्णन में वे किस प्रकार इन शब्दों और विचारों का उपयोग कर सकते हैं । वे किस प्रकार वर्णन किया जाए इस विषय पर एक दूसरे को सलाह भी दे सकते हैं ।

इन अधिवेशनों के समय शिक्षकों को हर छात्र को सम्मेलन लिखने में मदद करनी चाहिए । इस प्रकार के सम्मेलन प्रसंग में शिक्षक की भूमिका एक पाठक की होती है । कुछ लिखने वाले मौके को चुनौती मानकर शब्दों को ऐसी जगह इस्तेमाल करेंगे जहाँ वे अयोग्य हैं । जब वे लिखने में ऐसा करते हैं, तब शिक्षक उनकी गलतियों को सुधार सकते हैं, या शब्दकोशों और पर्याय शब्दकोशों (thesauruses) के बहतर इस्तेमाल से सही शब्दों का चयन करने में उनकी मदद कर सकते हैं । इस प्रकार की मदद से छात्र आगे चलकर ज्यादा असरदार संचारक बनेंगे । कुछ दूसरे छात्र इस प्रकार के जोखिम नहीं

उठाएँगे और शिक्षक देखेंगे कि ऐसे छात्र पहले से सीखे हुए वाक्यों का बार-बार उपयोग कर रहे हैं । ऐसी स्थिति में शिक्षकों को हर छात्र को नए शब्दों का इस्तेमाल करने का प्रोतसाहन देना चाहिए जिससे कि उनके पाठकों को नये अर्थ समझाए जा सकें । एक बार लिखने वाले अपने पाठकों के बारे में सोचने लगते हैं, वे बहतर लेखक बन जाते हैं, और भाषा के बहतर छात्र भी ।

लेखन के द्वारा परिच्छेद-स्तर की भाषा को भी ज्यादा अच्छी तरह समझा जा सकता है । कक्षा के अन्दर की बात-चीत अक्सर अंतवैर्यक्तिक प्रकार की होती है—जहाँ छात्र और शिक्षक एक दूसरे से सवाल पूछते हैं और सवालों के जवाब देते हैं । इस प्रकार के कार्यों के उपयोग से उनकी भाषा वाक्य-स्तर पर जानी-पहचानी बनती जाती है ।

हालाँकि, वास्तविक्ता यह है कि कक्षा के बाहर की दुनिया ऐसी भाषा पर केन्द्रित है जो पेचीदा जानकारी को व्यक्त कर सके । लिखने वालों को लिखित पाठों को आदर्श मानने का बढ़ावा देना चाहिए । उदाहरण के तौर पर, स्वयं का वर्णन करने के लिए मशहूर लोगों की लघु आत्मकथाएँ पढ़नी चाहिए जिसके द्वारा वे अपने आप पर लिखे गए लेखों को और विस्तार से लिख सकते हैं । पढ़ने और लिखने के संबंध को जितना छात्र समझ पाते हैं उतना ही पाठ के विषय को जानने, सहायक जानकारी को बटोरने, और अर्थ के

अनुमान लगाने में वे और सक्षम बनते जाते हैं । इस प्रकार के ज्ञान को बढ़ाना महत्वपूर्ण है ताकि सीखने वाले भाषा के और अच्छे छात्र बने, अपने तर्क-वितर्क पेश कर सकें, दूसरों को समझा सकें, और अपनी राय प्रकट कर सकें । भाषा के लंबे टुकड़ों की बनावट कैसी होती है, और चर्चा में कैसे प्रभावशाली हिस्सेदार बना जाए, यह सीखने-समझने के लिए लिखना एक शक्तिशाली साधन है ।

आगे पढ़ने के सुझाव – Hirvela, 2004; McCarthy, 1991.

7. भाषा सिखाने में भूल सुधारना और प्रतिक्रिया देना

छात्रों को यह अधिकार है कि उनकी गलतियों को सुधारा जाए ताकि उनकी शुद्धता और समझ बढ़े ।

सीखने वालों का कहना है कि वे चाहते हैं कि उनकी गलतियाँ सुधारी जाएँ । यद्यपि, अनुसंधान स्पष्ट करता है कि शिक्षक के द्वारा बोले या लिखे काम की अत्याधिक आलोचना से छात्र बोलने-लिखने में संकोच करने लगते हैं । इससे यह बात साफ़ हो जाती है कि इतना टोकना कि छात्र चुप रहना शुरू कर दें बिलकुल अनुकूल है । यही बात लिखित गृहकार्य लौटाते समय भी लागू होती है—गृहकार्य में इतनी ज्यादा भूलों को

सुधारा गया हो तो छात्र मानने लगते हैं कि वे कभी अपनी गलतियों पर काबू नहीं पा सकेंगे । कक्षा में किए अवलोकन के मुताबिक शिक्षक भूलों को सुधारने के लिए कई युक्तियों का उपयोग करते हैं । ये युक्तियाँ बिलकुल सीधी हो सकती हैं—जैसे कि गलती पर ध्यान केन्द्रित करना—अथवा अप्रत्यक्ष रूप से वाक्यांश को सुधारकर दोहराना या छात्रों से गलती से संबंधित नियम बुलवाना । अनुसंधान बताता है कि शिक्षक वाक्यांश को सुधारकर दोहराना पसंद करते हैं । हालांकि यह भूल सुधारने का बद्धुत ही विनम्र तरीका है, सीखने वाले इस प्रकार के सुधार को ज्यादातर अनदेखा कर देते हैं । वे वाक्यांश के अर्थ पर ज्यादा ध्यान देते हैं और शिक्षक के कथन को सिर्फ संवाद का एक हिस्सा मानते हैं । ज्यादा असरदारक होने के लिए शिक्षकों को स्पष्टिकरण की माँग करनी चाहिए (*"माफ़ कीजिए, मुझे वह समझ में नहीं आया । आप क्या कहना चाहते थे ?"*) । ऐसा करने पर छात्र सुधार का अपने बोलने में संभवतः ज्यादा समावेश करेंगे । समझते वक्त की गई गलतियों को पहचानना ज्यादा मुश्किल है और अनुसंधान के मुताबिक शिक्षक अक्सरइन भूलों को बिलकुल"देख" ही नहीं पाते या सीखने वालों की पहल में कमी समझकर टाल देते हैं ।

भूल सुधारना हमेंशा सकारात्मक होना चाहिए लेकिन साथ ही साथ लक्षित भी । छात्रों को समझाना चाहिए कि उनकी गलतियाँ क्या हैं, और उन्हें किस प्रकार जाने-पहचाने संदर्भ में सुधारा जा सकता है । अगर छात्रों से कहा जाए *"नहीं, याद रखो कि अंग्रज़ी में third person singular verb में –s लगाया जाता है, जैसे कि 'he runs'। अगर तुम यह गलती ठीक कर लोगे तो तुम्हारी कहानी काफ़ी स्पष्ट हो जाएगी,"* तो वे अपनी भूल को आसानी से समझ लेते हैं । लेकिन अगर उन्हें यह सुनाया जाए कि *"तुम कब याद रखोगे कि third person singular verb में –s लगाया जाता है,"* तो उन्हें बुरा लगेगा और वे अपने आप को सीखने से दूर कर लेंगे ।

शिक्षकों को भी चाहिए कि गलतियों को सिर्फ व्याकरण की भूल न समझें । ऐसी गलतियाँ जो विषय वस्तु में वास्तविक गलत सूचना की वजह से हुई हों, या जिस संस्कृति को सीखा जा रहा है उसकी जानकारी न होने पर हुई हों, उन्हें भी सुधारना जरूरी है । बोलते समय ऐसी गलतियों को सुधारने से सीखने वालों में अपने विचार व्यक्त करने की क्षमता बढ़ेगी और शिक्षक योग्य ज्ञान भी जोड़ पाएँगें । खाने के समय इस प्रकार की क्रिया का अच्छा उदाहरण मिल सकता है ।

कुछ समुदायों में दोपहर का खाना मुख्य होता

है और कुछ में शाम का । छात्र अलग अलग

पद्धतियों के "अच्छे" और "बुरे" पहलू काफ़ी जल्दी

समझ लेते हैं । शिक्षकों को अगर छात्रों की राय बदलनी हो तो उन्हें इन पद्धतियों तथा इनके अमल के बारे में और जानकारी देनी चाहिए । वैसे ही, कई बार गलतियाँ छात्रों के निबंधों के विषय वस्तु में भी मिलेंगी । शिक्षकों को छात्रों के लिखित निबन्धों में संदेश की शुद्धता और प्रस्तुतिकरण को सुधारने के लिए इस प्रकार की टिप्पणी करनी चाहिएः " *भोजन के समय की आदतों के बारे में तुमने अच्छा मुद्दा पेश किया है । अगर तुम उस भाग, जिसमें तुलना की गई है, में कुछ और जाड़ोगे, तो तुम्हारा मत और भी मजबूत हो जाएगा । अभी तुम्हारे निबंध में बहुत सामान्यकरण हैं, तुम्हें कुछ ठोस उदाहरण जोड़ने चाहिए ।*" इस तरह की प्रतिक्रिया सीखने वालों को याद दिलाती है कि उनके शिक्षक पाठक हैं और पाठकों के रूप में उन्हें यह अधिकार है कि पढ़े जा रहे पाठ का गद्य स्पष्ट, दिलचस्प और शुद्ध हो ।

सभी छात्रों को डायरी रखने का बढ़ावा देना चाहिए जिस में वे उन मुख्य चीज़ो को लिख सकें जिन्हें याद करने से उनके बोलने तथा लिखने में सुधार होगा । कक्षा में एक

लेखाचित्र होना—जिस में हर छात्र नई भाषा में सीखे किसी सुधार को लिख अपना योगदान करे—भी एक असरदार तरीका है यह संदेश भेजने का कि सभी को भाषा की शुद्धता पर गौर करना चाहिए; कि सब लोगों से गलतियाँ होती हैं; और सब को बार-बार हो रही भूलों को सुधारने पर ध्यान देना चाहिए ।

आगे पढ़ने के सुझाव – Lightbrown & Spada, 1990; Lyster & Ranta, 1997.

8. टेक्नोलोजी और दूसरी भाषाऐं सिखाना

शिक्षकों को उपलब्ध सामग्री को प्रभावशाली और सक्षम तरीके से इस्तेमाल करना चाहिए।

टेक्नोलोजी का काम उसे इस्तेमाल करने वाले को उसके लक्ष्य तक पहुँचाना है । भाषाओं के शिक्षक अक्सर यह भूल जाते हैं कि उनके व्यवसाय की सबसे प्रधान टेक्नोलोजी कागज़-किताबों और पेन्सिलों में बसी है । भाषा सिखाने वालों के लिए किताबों का मतलब भाषा की पाठ्यपुस्तक हो सकता है, लेकिन"किताब" शब्दका संबंध उन सभी पाठों से होना चाहिए जो एक खास पढ़ने वाले वर्ग के लिए लिखे गये हैं और जिनका विषय इस वर्ग को दिलचस्प करता है । कम उम्र के छात्रों के लिए एसी

किताबें जानकारी से भरी हो सकती हैं, जैसे कि मौसम, ज्वालामुखी, प्राचीन सभ्यता, या दिलच्सप जानवरों के बारे में । बड़ी उम्र के छात्रों के लिए लिखि किताबों में विमान विद्या या खेलों के बारे में जानकारी दी जा सकती है । किसी भी परिवेश में साक्षरता—किसी चीज़ के बारे में पढ़कर उसके बारे में लिख पाना—ही भाषा सिखाने का मूल आधार है । अगर एक कक्षा-पुस्तकालय हो जो किताबों से भरी हो, और जिनसे छात्र सीख सकें और जिनका वे मज़ा ले सकें तो शिक्षकों के पास यह सबसे महत्वपूर्ण टेक्नोलोजी है । हर कक्षा में लेखन सामग्री (कागज़, पेन्सिल, पेन और मारकर) भी जरूरी है जिससे सीखने वाले भाषा के साथ काम कर उसे अपना सकें । छात्रों को अपनी शिक्षा में स्वयं क्रियाशील भागीदार होना आवश्यक है । पढ़ने और लिखने में क्रियात्मक कडियाँ जोड़ना ही सबसे मुख्य कार्य है ।

यह दुर्भाग्य है कि आधुनिक दुनिया अक्सर शिक्षकों को यह मनवाने की कोशिश करती है कि क्मप्युटर और सॉफ्टवेयर किताबों, और पेन-पेन्सिल के बदले में इस्तेमाल किए जा सकते हैं । साफ़ बात है कि वे कभी भी उनकी जगह नहीं ले पाएँगे । यद्यपि, क्या सामग्री प्राप्त है इसकी समझ क्मप्युटरों ने बदल दी है । अगर शिक्षकों को इन्टरनेट तथा एक प्रिन्टर आसानी से उप्लब्ध है तो वे बेहिसाब नयी-से-नयी और वास्तविक सामग्री, जो

लगभग मुफ्त है, का इस्तेमाल कर सकते हैं । निस्सन्देह इस स्थिति में कुछ जोखिम भी हैं । सामग्री को ध्यान से छानना आवश्यक है । कई बार ऐसा हो सकता है कि भाषा का उपयोग बहुत नीचे स्तर का या अयोग्य हो ; किसी और समय भाषा कुछ ज्यादा ही मुश्किल हो सकती है । इन्टरनेट से प्राप्त कई सामग्री छात्र की उम्र और संस्कृति के लिए अयोग्य हो सकती है । जो शिक्षक सहूलियत और वास्तविकता में हासिल कर सकते हैं वही जटिल तथा अयाग्य सामग्री के द्वारा खो सकते हैं । यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षक आधुनिक टेक्नोलोजी को भाषा का उपयोग कर रहे लोगों तथा उनकी संस्कृति को दर्शाती उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री का स्त्रोत मानें । टेक्नोलोजी को भाषा सिखाने की जगह नहीं, बल्कि सिर्फ एक साधन मानना जरुरी है ।

कम-महंगी टेक्नोलोजी, जैसे कि portable टेलीफोन, कई कक्षाओं में जल्द ही भुमिका निभाएगी । शिक्षकों को टेक्नोलोजी के साथ काम करना चाहिए, न की उसके खिलाफ़ । इन्टरनेट के द्वारा पाठ्यपुस्तक भेजी जा सकती हैं । यही बात व्यापारिक किताबों पर भी लागू होती है । कई सीखने वाले गाने और विडियो डाउनलोड करते आए हैं । उनके इस ज्ञान को बढ़ावा देना चाहिए ताकि वे नई भाषा में लिखि किताबें डाउनलोड करें । कई साधन, जैसे कि स्पेल-चैकर, व्याकरण-चैकर, शीघ्र अनुवाद करने के साधन, भी उपल्बध हैं

और ज्यादा महंगे नहीं हैं । छात्रों को इन साधनों के इस्तेमाल के बारे में सिखाना जरूरी है । अनुवाद के साधन खास दिलचस्प होते हैं, लेकिन छात्रों को सावधान रहना आवश्यक है । कभी-कभी ऐसे अनुवादों में भाषा की बारीकी चूक जाती है और छात्रों को यह समझाना जरूरी है कि सिर्फ भाषा को अच्छी तरह जानने से ही वे इस प्रकार के अनुवाद का सही मुल्यांकन कर पाएँगें ; न कि मशीन के अनुवाद को सही मानकर भाषा सीखेंगे । अगर शिक्षकों ने पहले से ही छात्रों को भाषा को अपनाने का बढ़ावा दिया हो, न कि उसे किसी काल्पनिक ख्याल की तरह पढ़ाया हो तो यह बात आसानी से ज़ाहिर होगी।

शिक्षकों को टेक्नोलोजी के माध्यम से दुसरे शिक्षकों और कक्षाओं से, जहाँ वही भाषा सिखाई जा रही है, संपर्क करना चाहिए । व्यक्तिगत छात्रों को उसी भाषा के दूसरे छात्रों से संपर्क कराना छात्रों को कक्षा के बाहर भाषा का अभ्यास कराने का महत्वपूर्ण तरीका है । कक्षा के अतिरिक्त के संपर्क से भाषा की कुछ विशेषताऐं, जैसे कि उसका शब्द संचारण, उच्चारण, और शब्दों का सही चयन, केवल सीखने की चीज़े नहीं रहकर अर्थ के वाहन बन जाते हैं ।

आगे पढ़ने के सुझाव – Blake, 2008; Hubbard & Levy, 2006.

9. मूल्यांकन

अच्छे शिक्षक उनके छात्र भाषा के साथ क्या कर सकते हैं और क्या नहीं इसका निरीक्षण कर अपने पढ़ाने को उसके अनुकूल बनाते हैं ।

शिक्षक और छात्र अक्सर मूल्यांकन के विषय को लेकर कुछ अधिक प्रतिक्रिया करते हैं और यह मानते हैं कि परीक्षा सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है तथा उसे "पास" न करने पर छात्रों को दंड दिया जाएगा । मूल्यांकन का आधुनिक दृष्टिकोण ज्यादा वस्तृत है और यहाँ छात्र क्या कर सकते हैं इस पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है, न कि वे क्या नहीं कर सकते । इससे शिक्षकों को छात्रों की काबिलियत का अन्वेषण करने का और सुधार के लक्ष्य बनाने का मार्गदर्शन मिलता है । सीखने वाले क्या जानते हैं उस पर स्पष्ट प्रतिपुष्टि दी जानी चाहिए और वे जो नहीं जानते उसे सीखने तथा सुधारने का मार्गदर्शन देना चाहिए । प्रतिपुष्टि का केन्द्र भाषा के रूप के साथ साथ किसी संदेश के प्रभाव पर भी होना चाहिए । जब छात्र बोल रहे हों, तब शिक्षक को बार-बार उन्हें टोककर "सही" भाषा-रूप बताने नहीं चाहिए । शिक्षक तथा दूसरे छात्रों को संवाद में तभी मदद देनी

चाहिए जब किसी गलती की वजह से बात-चीत में रुकावट हो रही हो । शिक्षकों को इस प्रकार की गलतियों को सुनकर नोट करना चाहिए । फिर, इन नोटों पर आधारित ऐसे पाठ तैयार करने चाहिए जो स्पष्टिकरण दें और छात्रों को शुद्धता सुधारने के मौके भी ।

इसी तरह लेखन के मुल्यांकन के लिए, छात्रों को portfolio बनाने का बढ़ावा देना चाहिए जिस में वे पाठ्यक्रम के दौरान की सारी लिखावट संभाल कर रख सकें । इस लिखावट की मदद से शिक्षक और छात्र प्रगति को माप आगे के लक्ष्य बिठा सकते हैं । सभी सीखने वालों को यह याद दिलाना जरूरी है कि भाषा सीखना एक प्रक्रिया है और शिक्षक समय के साथ विकास की उम्मीद रखते हैं, न कि तात्कालिक प्रवीणता । ईनाम प्रक्रिया पर आधारित होने चाहिए, एक बार दी गई परीक्षा पर नहीं ।

व्याख्यात्मक प्रवीणता (सुनना और पढ़ना) का मुल्यांकन करना इसलिए ज्यादा मुश्किल है क्योंकि पाठक और श्रोता हर बार अपनी समझ को आसानी से नहीं प्रकट करते । परंपरागत रूप से शिक्षक छात्रों को ऐसे सवाल पूछँते हैं जिनके जवाबों से उनकी समझ ज़ाहिर हो । लेकिन अक्सर ऐसे सवाल खुद उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल करते हैं जो शब्द पाठ में पाए जाते हैं, और छात्र जवाब देने के लिए बस शब्दों के प्रबंध में फेर-बदल कर देते हैं । व्याख्यात्मक प्रवीणता के मामले में छात्र की मूल भाषा की बड़ी भुमिका होती है

। छात्रों को उनकी मूल भाषा में पूछा जाना चाहिये कि उन्हें क्या समझ में आया है और जवाब भी मूल भाषा में देने की अनुमति होनी चाहिए । अनुसंधान के अनुसार छात्र जो बता सकते हैं उससे कई ज्यादा समझ पाते हैं । जब शिक्षक यह जान पाएँगे कि छात्र किस तरह पढ़े या सुने गए पाठ को समझते हैं, तब वे उसके संस्कृतिक संदर्भ को स्पष्ट कर छात्रों को मुख्य जानकारी दे सकते हैं जो पहले ज़ाहिर नहीं थी ।

जो छात्र विदेश पढ़ने जाना चाहते हैं, उनके लिए मुल्यांकन एक अहम भुमिका निभाता है । सरल रूपरेखाओं के द्वारा यह जाना जा सकता है कि सीखने वाले किस स्तर पर कुछ कार्य कर सकते हैं, और उन्हें क्या सीखना बाकी है । अमरीका में निपुणता-अनुस्थापन आम है । यह अनुस्थापन छात्र किसी अवधि में सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के क्या कार्य पूरे कर पाते हैं, इस पर केन्द्रित होता है । दो प्रक्रियाएँ—मौखिक निपुणता बातचीत (Oral Proficiency Interview) और लिखित निपुणता मुल्यांकन (Writing Proficiency Assessment)—शिक्षकों को निर्णय लेने के लिए उपल्बध हैं । यूरोप में कॉमन योरोपियन फ्रेमवर्क (Common European Framework, CEF) इस्तेमाल किया जाता है । CEF अमरीका के दस्तावेज़ों का उपप्रमिय है और basic (A1) से लेकर Proficiency (C2) तक का बढ़ता क्रम बताता है । CEF International English-Language Testing System (IELTS) के

संरेखित है । इन सारे आकलनों का महत्व यह है कि सीखने वाले स्वयं समझ सकें कि वे जिस भाषा को सीख रहे हैं उसके साथ क्या-क्या कर सकते हैं और खुद के लिए लक्ष्य तथा उम्मीद तैय कर सकें । इसके अतिरिक्त, ये ढांचें दिखलाते हैं कि भाषा का ज्ञान संघटित है, अर्थात पढ़ने, लिखने, सुनने और बोलने की क्रिया कुशलता एक दूसरे को सहारा देती हैं और इन में खाफ़ी नज़दीकी रिश्ता है । परिशुद्धी भाषा के प्रभावशाली ज्ञान और उपयोग का सिर्फ एक पहलू है ।

आगे पढ़ने के सुझाव – Shohamy, 1995; McNamara & Roever, 2006.

10. दूसरी भाषा के शिक्षकों का व्यवसायिक विकास

शिक्षकों को चाहिए कि भाषा शिक्षण में हो रहे नए विकास की जानकारी रखें और अपनी भाषा निपुणता को बनाए रखें तथा आगे सुधारें ।

पिछले दो दशकों में भाषा शिक्षण में जितना परिवर्तन आया है उतना पिछली दो सौ सालों में नहीं आया था । इस परिवर्तन के कई कारण हैं । एक कारण यह कि अनुसंधान की बुनियाद बढ़ रही है । सभी शिक्षकों को जानकारी से वाकिफ़ होना जरूरी हो गया है । भाषा शिक्षण में आए और आ रहे परिवर्तन का दूसरा कारण है लोगों की दुनिया भर में

तेज़ी से यात्रा करने, और अलग-अलग हालात में रहने, काम करने और पढ़ने की क्षमता । विदेश में घूमना, रहना और पढ़ना पहले सिर्फ एक छोटे से विशीष्ट वर्ग के लिए मुमकन था । अब अवसर बढ़ गए हैं और इन अवसरों ने भाषा शिक्षण पर ज्यादा बड़े वर्ग की जरूरतों को पूरा करने का दबाव डाला है । इस परिवर्तन का तीसरा कारण है टेक्नोलोजी । टेक्नोलोजी के माध्यम से भाषा के शिक्षक एक ही पल में दुनिया भर में संपर्क बना सकते हैं और अपने व्यवसाय के बारे में एक दूसरे से बात-चीत कर सकते हैं ।

इन सब परिवर्तनों की वजह से शिक्षकों पर जिम्मेदारी बढ़ जाती है । फिर भी, ज्यादातर शिक्षकों के लिए ये सारी जिम्मेदारियाँ उस एक जिम्मेदारी से छोटी हैं—और वह है अपने खुद के ज्ञान को बरकरार रखना और जिस भाषा को वे सिखा रहे हैं उसे सक्रिय तथा आधुनिक रूप में इस्तेमाल करना । दुनिया भर में ज्यादातर शिक्षक ऐसी भाषा सिखाते हैं जो उनकी मातृभाषा नहीं है । ये शिक्षक कहते हैं कि भाषा निपुणता को बरकरार रखना उन पर एक विशिष्ट प्रकार का दबाव डालता है । उन्हें यह चिन्त रहती है कि वे जिस भाषा को सिखा रहे हैं उसे वे दोशहीन तरीके से इस्तेमाल नहीं कर सकते और इस दोष युक्त इस्तेमाल के कारण सीखने वालों का नुकसान हो सकता है । ऐसी परिस्थिति में अक्सर शिक्षक इस पत्रिका में बताई गई कुछ तकनीकों का इस्तेमाल करने से कतराते हैं

। यह बात साफ़ है कि सिर्फ व्याकरण समझाना और वाक्य-स्तर की भाषा के साथ काम करने से शिक्षक कक्षा को नियंत्रित रख सकते हैं—यह उनके लिए आरामदायक स्थिति है । समूह में कार्य कराना, जो निस्सन्देह ज्यादा अनुनेय और कक्षा कार्य से अधिक अनिश्चित है, यह मांग करता है कि शिक्षक को भाषा के सभी आकारों पर अच्छा अधिकार हो । इस प्रकार की मांग शिक्षकों के लिए संतर्जक हो सकती है और उन्हें व्याकुल बना देती है । लेकिन साथ ही साथ दुसरे अनुसंधान के मुताबिक विदेशी (non-native) शिक्षक को बड़े फ़ायदे भी हैं । विदेशी (non-native) शिक्षक भाषा सीखने की उसी प्रक्रिया से गुज़रे हैं जिससे उनके छात्र गुज़र रहे हैं । विदेशी (non-native) शिक्षक ने सीखने की प्रक्रिया की ओर ऐसी सचेतना हासिल की है जो मातृभाषी कभी नहीं पा सकते ।

शिक्षक जो कुशलता लाते हैं—प्रशिक्षण और भाषा-संबंधी दोनों—उनमें संतुलन बनाए रखना तथा उन्हें बहतर बनाना बहुत मुश्किल कार्य है । सभी शिक्षकों को अद्यतन व्यवसायिक पुस्तकालय बनाने के लिए पूंजी मिलनी चाहिए । उन्हें शिक्षक-संबंधी पत्रिकाएँ प्राप्त होनी चाहिए और स्थानीय एवं अंतरराष्ट्रिय सम्मेलनों—जो असरदार भाषा शिक्षण के तरीकों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं—में हिस्सा लेने की अनुमति होनी चाहिए । भाषा-संबंधित विकास ज्यादा कठिन है । जाहिर है कि अधिकतर शिक्षक हर साल उन जगहों पर नहीं जा

सकते जहाँ जो भाषा वे सिखा रहे हैं वह भाषा स्थनीय निवासी बोलते हैं । इस वास्तविकता के बावजूद उनके पास जिस भाषा को वे सिखा रहे हैं उसे सक्रिय रूप से न पढ़ने और सुनने का कोई बहाना नहीं है । अगर शिक्षकों के पास इंटरनेट है, तो पाठन और श्रव्य सामग्री हर रोज़, बल्कि हर घंटे, आसानी से हासिल की जा सकती है । शिक्षकों को उस भाषा के कम से कम एक अखबार को बुक्मार्क कर रोज़ पढ़ने की आदत डालनी चाहिए । रेडियो और टेलीविजन के स्टेशन नियमित रूप से खबरों को प्रसारित करते हैं, और अगर शिक्षकों को इंटरनेट उपलब्ध है तो वे इन प्रसारणों को सुन सकते हैं । जिन शिक्षकों के पास इंटरनेट की सुविधा नहीं है, उन्हें किताबों और पत्रिकाओं पर नियमित इस्तेमाल / उपभोग के लिए निर्भर होना चाहिए । कभी कभी शिक्षक सिर्फ उसी सामग्री को पढ़ते हैं जो उन्होंने छात्रों के लिए तैयार की है । वास्तव में उन्हें अपना खुद का भाषा पुस्तकालय बनाए रखना चाहिए जिस में वे प्रामाणिक भाषा निवेश लिख सकें । जिस भाषा को वे सिखाते हैं उस में बनाई या डब की गई फिल्में देखने से भी शिक्षक अपनी श्रव्य समझ को बरकरार रख पाएँगें । शिक्षकों को ऐसे मौके पर नज़र रखनी चाहिए और आवेदन करना चाहिए जब वे भाषा को बोलने वालों के बीच रह सकें ।

आगे पढ़ने के सुझाव – Briane, 1999; Horwitz, 2008; Llurda, 2005.